17. (b) प्रायद्वीपीय नदी प्रणाली और हिमालय की नदी प्रणाली के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- किसी भी देश का अपवाह तंत्र वहाँ के उच्चावच तथा भूमि के ढाल पर निर्भर करता है। भारत एक विशाल देश है। इसके उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार है जिनके बीच उत्तरी भारत का विशाल मैदान है। अतः भारत के अपवाह तंत्र को मुख्यतः दो वर्गों में बाँटा जाता है :-

1. हिमालय की नदियाँ
2. प्रायद्वीपीय नदियाँ

अपवाह तंत्र

- **हिमालयी नदियाँ**
  - सिंधु अपवाह तंत्र
  - गंगा अपवाह तंत्र
  - ब्रह्मपुत्र अपवाह तंत्र
- **प्रायद्वीपीय नदियाँ**
  - बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ
  - अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ

स्थलाकृति, ढाल और जलवायु विशेषताओं में भिन्नता के कारण हिमालयी

Scanned with CamScanner

और प्रायद्वीपीय नदियों की विशेषताओ में स्पष्ट अंतर पाया जाता है, जिसे हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं -

① उत्पत्ति के संबंध में -

हिमालयी नदियों की उत्पत्ति ऊँचे पर्वतों और हिमानियों से होती है जिससे इनमें वर्ष भर जल प्रवाहित होता रहता है। प्रायद्वीपीय नदियाँ पठार और कम ऊँचाई वाले पहाड़ियों निकलती हैं जो केवल वर्षाकाल में जलपूर्ण रहती हैं परन्तु शुष्क ग्रीष्म ऋतु में प्राय: सूख जाती है।

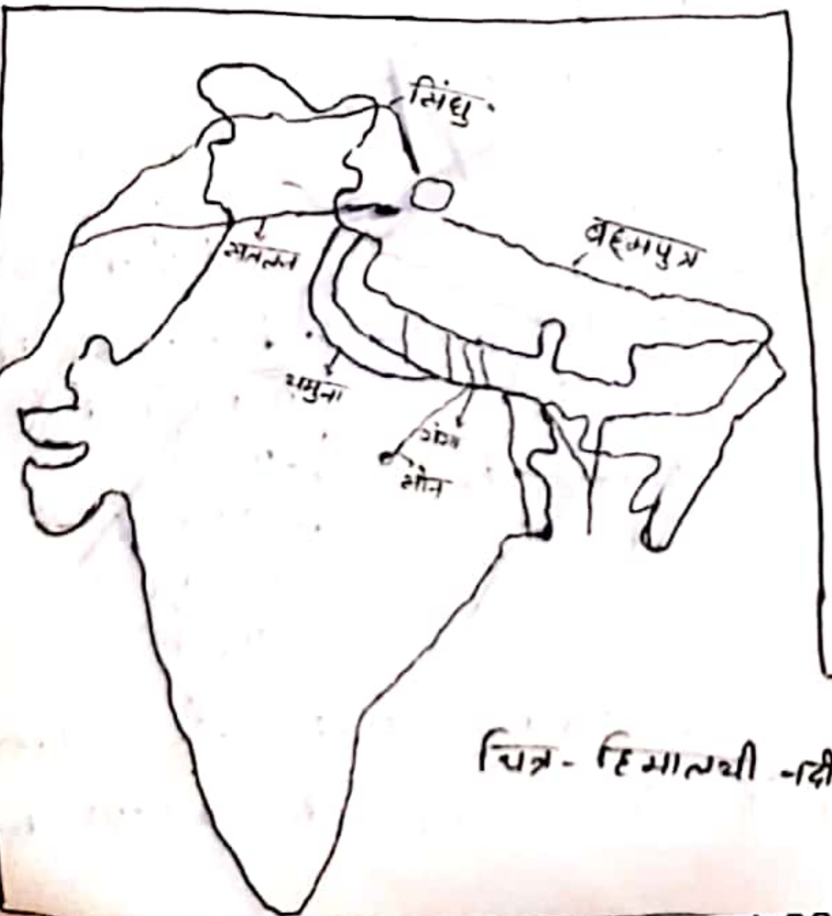

चित्र- हिमालयी नदी तंत्र

Scanned with CamScanner

② अवस्था के संबंध में

हिमालयी नदियाँ अभी तरुणावस्था में हैं एवं अपनी घाटियों को गहरा करने में व्यस्त हैं। इन नदियों ने हिमालय क्षेत्र में गहरी घाटियों एवं खड्डों का निर्माण किया है।

प्रायद्वीप की नदियाँ जरा एवं अनुपातित अवस्था में हैं और अपने आधार तल को प्राप्त कर लिया है। ये खुली छिछली घाटियों में प्रवाहित होती हैं।

③ प्रवाह मार्ग के संबंध में

हिमालयी नदियों के लम्बे प्रवाह मार्ग रूक्ष पर्वतों, समतल मैदानों एवं दलदली डेल्टा क्षेत्रों से गुजरते हैं। इनमें शीर्ष अपरदन, मार्ग परिवर्तन, नदी अपहरण और विसर्पण प्रभावशाली है।

प्रायद्वीपीय नदियाँ छोटी हैं जिनका विस्तार पठार और सँकरे तटीय मैदान में फैला है। इनके मार्ग सुनिश्चित और घाटियाँ स्थायी हैं।

④ अपवाह प्रतिरूप के आधार पर

हिमालयी नदियाँ या तो पूर्ववर्ती

Scanned with CamScanner

था अनुवर्ती हैं। जिन्होंने मैदान में वृक्षाकार अपवाह प्रतिरूप का निर्माण किया है।

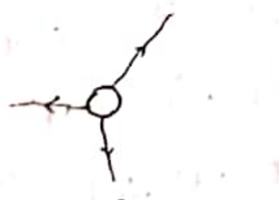

चित्र - अरीय अपवाह प्रतिरूप
जैसे- सोन, नर्मदा एवं महानदी

प्रायद्वीपीय नदियों में अधिकांश अध्यारोपित एवं ~~अनुवर्ती~~ हैं पुनर्युवनित हैं जिन्होंने अरीय, जालीदार एवं आयताकार अपवाह प्रतिरूपों का विकास किया है।

चित्र- वृक्षाकार अपवाह प्रतिरूप
जैसे- गंगा नदी तंत्र अपवाह

⑤ जल उपयोगिता के आधार पर

पर्वतीय क्षेत्र में हिमालय की नदियों के जल का उपयोग जलविद्युत उत्पादन तथा मैदानी भाग में सिंचाई, पेयजल तथा आन्तरिक परिवहन हेतु किया जाता है।

प्रायद्वीपीय नदियाँ जहाँ ऊपरी घाटियों में जलविद्युत उत्पादन हेतु उपयुक्त हैं वहीं उनके द्वारा सिंचाई और नौ परिवहन केवल तटीय मैदानी क्षेत्रों में ही संभव हो पाता है।

Scanned with CamScanner

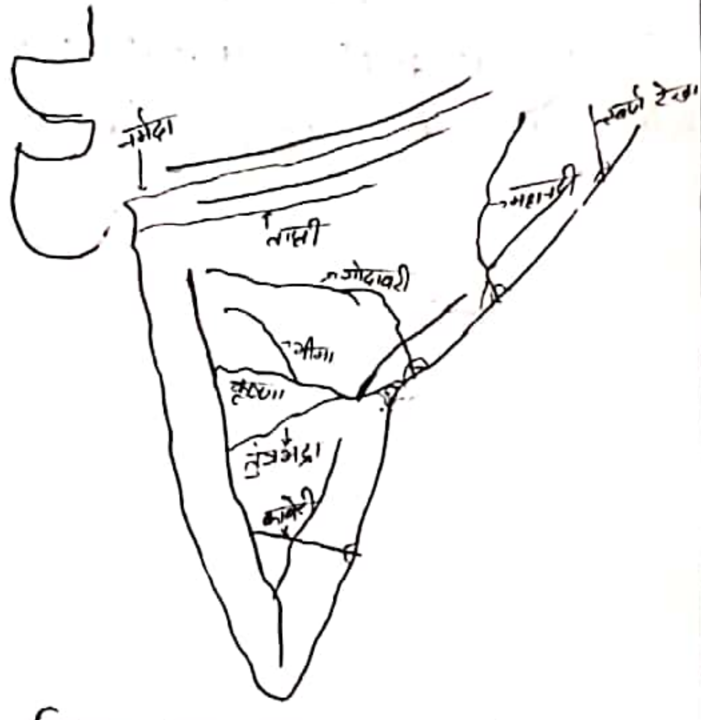

चित्र – प्रायद्वीपीय नदी तंत्र

(6.) आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में :-

हिमालयी नदियों ने पर्वतीय भागों से अपरदित पदार्थ लाकर निक्षेपित कर विशाल उर्वर मैदानों का निर्माण किया है जो कृषि, परिवहन विकास, औद्योगिक विकास और नगरीय विकास हेतु सर्वोपयुक्त हैं। यही कारण है कि यह देश का सर्वाधिक जनसंकुल क्षेत्र है।

प्रायद्वीपीय क्षेत्र में केवल डेल्टाई भाग अधिक आबाद हैं जबकि शेष पठारी भाग में जनसंख्या का जमाव विरल है।

Scanned with CamScanner

अतः इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से हिमालयी नदियों एवं प्रायद्वीपीय नदियों के मध्य अंतर स्पष्ट होता है।

Scanned with CamScanner